प्रकृति का संदेश

प्रकृति ने हमें अनेक बहुमूल्य उपहार दिए हैं, जिनका महत्त्व हमें समझना चाहिए। नदियों, पर्वतों, झरनों तथा वनस्पतियों के बिना हमारी पृथ्वी बेरंग प्रतीत होगी। प्रकृति के बिना हम कुछ नहीं। वह एक दयामयी माता के समान है, जो हमारा हर प्रकार से पालन– पोषण करती है। सदियों से वह हम मनुष्यों और जीव–जंतुओं की निःस्वार्थ भाव से सहायता कर रही है, परंतु हम स्वार्थी मानव इस बात का फायदा उठा रहे हैं। हम अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति को नष्ट कर रहे हैं, प्रकृति का संतुलन बिगाड़ रहे हैं। इसी कारण हम अपने किए का परिणाम भुगत रहे हैं।

आज के कोरोना काल में हम यह बात भली–भाँति समझ चुके हैं कि प्रकृति हमें समझाने की कोशिश कर रही है कि हमें प्रकृति के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। पूरी दुनिया के तालाबंदी में रहने से हमारे आस–पास का पर्यावरण बहुत सुंदर और शुद्ध हो गया है। इससे हम यह समझ सकते हैं कि प्रकृति हमें क्या संदेश दे रही है।

हम मनुष्यों ने अपने लाभ के लिए कई पेड़ काट डाले। अब हमारी ऐसी हालत हो चुकी है कि हमें ऑक्सीजन सिलिंडर की ज़रूरत पड़ रही है। हम घरों और कारखानों के कचड़े से अपने आस–पास का वातावरण दूषित कर रहे हैं, जिसके कारण बहुत सारी जानलेवा बीमारियाँ फैल रही हैं, ग्लोबल वॉर्मिंग बढ़ता जा रहा है। कई राज्यों में जलवायु परिवर्तन हो रहा है। इसके कारण विशाल बर्फ़ीले सागर तेज़ी से पिघल रहे हैं और मैदानी क्षेत्रों में बाढ़ आ रही है। इस प्रक्रिया में अनगिनत प्राणी मारे जा रहे हैं। प्रकृति को हमारी नहीं हमें प्रकृति की ज़रूरत है।

हमें सौंदर्य से भरी प्रकृति का महत्त्व समझना चाहिए। अभी भी वक्त है, हम अभी भी प्रकृति को बचा सकते हैं। जिससे भविष्य में आने वाली पीढ़ियों के लिए सुंदर प्रकृति बची रहे। हमें पृथ्वी तथा प्रकृति की हालत में सुधार लाने के लिए कुछ–न–कुछ करना चाहिए। शायद यही प्रकृति का संदेश है।

–दिया पंत IX C